''मीठे बच्चे – इसी रुहानी नशे में रहो कि हम ईश्वरीय फैमिली के हैं, हम अपनी गुप्त दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं''

प्रश्नः- बच्चों में कौन-सी आदत पक्की हो तो सारा दिन खुशी बनी रहे?

उत्तरः- अगर सवेरे-सवेरे उठकर विचार सागर मंथन करने की आदत हो तो सारा दिन अपार खुशी रहे। बाप की श्रीमत है बच्चे, अमृतवेले उठकर अपने बाप से मीठीमीठी बातें करो। विचार करो – हम अभी किस फैमिली के हैं। हमारा कर्तव्य क्या है, अगर बुद्धि में रहे कि हमारी यह ईश्वरीय फैमिली है, हम अपनी नई राजधानी स्थापन कर रहे हैं तो सारा दिन खुशी बनी रहे।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) किसी भी देहधारी की याद न आये, इसके लिए किसी से भी प्यार नहीं करना है। इससे भी पार जाना है। बहुत खबरदारी रखनी है। माया के विकल्पों से घबराना नहीं है, विजयी बनना है।

2) ध्यान दीदार में माया की बहुत प्रवेशता होती है इस भूत प्रवेशता से अपने को बचाना है। बाप को अपना सच्चा-सच्चा समाचार देना है।

वरदानः- हर बात में सार को ग्रहण कर आलराउण्ड बनने वाले सरल पुरुषार्थी भव

जो भी बात देखते हो, सुनते हो – उसके सार को समझ लो और जो बोल बोलो, जो कर्म करो उसमें सार भरा हुआ हो तो पुरुषार्थ सरल हो जायेगा। ऐसा सरल पुरुषार्थी सब बातों में आलराउण्ड होता है। उसमें कोई भी कमी दिखाई नहीं देती। कोई भी बात में हिम्मत कम नहीं होती, मुख से ऐसे बोल नहीं निकलते कि हम यह नहीं कर सकते। ऐसे सरल पुरुषार्थी स्वयं भी सरलचित रहते हैं और दूसरों को सरलचित बना देते हैं।

स्लोगनः- साधन यूज़ करते उनके प्रभाव से न्यारे और बाप के प्यारे बनो।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

एकरस स्थिति बनाने के लिए सिवाए एक के और कुछ भी देखते हुए न देखो। यह जो कुछ देखते हो यह कोई भी वस्तु रहने वाली नहीं है। तो एकरस, स्थेरियम तब रह सकेंगे जब कोई भी दृश्य देखते क्यों, क्या की उत्पत्ति न हो, यही व्यर्थ संकल्पों की हलचल का कारण है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी।

''मीठे बच्चे – आत्म-अभिमानी भव, चलते-फिरते, उठते-बैठते यही अभ्यास करते रहो तो तुम्हारी बहुत उन्नति होती रहेगी''

प्रश्नः- बाप की एक्यूरेट याद किन बच्चों की बुद्धि में रहेगी?

उत्तरः- जिन बच्चों ने बाप को एक्यूरेट जाना है। कई बच्चे कहते हैं कि बिन्दू को भला कैसे याद करें। भक्ति में तो अखण्ड ज्योति समझ याद करते आये, अभी बिन्दी कहकर मूँझ जाते हैं इसलिए पहले-पहले यह निश्चय हो कि बाप अखण्ड ज्योति नहीं, वह तो अति सूक्ष्म बिन्दू है तब याद एक्यूरेट रह सकती है।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) स्वदर्शन चक्रधारी बन 84 का चक्र बुद्धि में फिराते रहना है। बेहद बाप को याद कर बेहद का वर्सा लेना है, पावन बनना है।

2) किसी भी चीज़ की लालच नहीं करनी है, जो मिले उसमें खुश रहना है। रोटी-टुकड़ खाना है, बाप की याद में रहना है।

वरदान:- सर्व के दिलों के राज़ को जान सर्व को राज़ी करने वाले सदा विजयी भव

विजयी बनने के लिए हर एक के दिल के राज़ को जानना है। किसी के मुख द्वारा निकलने वाले आवाज से उसके दिल के राज़ को जान लो तो विजयी बन सकते हो लेकिन दिल के राज़ को जानने के लिए अन्तर्मुखता चाहिए। जितना अन्तर्मुखी रहेंगे उतना हर एक के दिल के राज़ को जानकर उसे राज़ी कर सकेंगे। राज़ी करने वाले ही विजयी बनते हैं।

स्लोगन:- वैराग्य ऐसी योग्य धरनी है जिसमें जो भी फल डालेंगे वह फलीभूत अवश्य होगा।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

सदा उमंग-हुल्लास में एकरस रहने के लिए जो भी सम्बन्ध में आते हैं – चाहे स्टूडेन्ट, चाहे साथी सभी को सन्तुष्ट करने की उत्कंठा हो। जिसको भी देखो उससे हर समय गुण उठाते रहो। सर्व के गुणों का बल मिलने से सदाकाल के लिए उत्साह एकरस रहेगा। गुणग्राही बनो। अवगुणों को देखते हुए भी नहीं देखो।

''मीठे बच्चे – अपने आपसे पूछो कि मैं कितना समय बाप की याद में रहता हूँ, देही-अभिमानी स्थिति कितना समय रहती है?''

प्रश्नः- तकदीरवान बच्चे ही बाप का कौन-सा डायरेक्शन पालन करते हैं?

उत्तरः- बाप का डायरेक्शन है – मीठे बच्चे, आत्म-अभिमानी भव। तुम सब आत्मायें मेल हो, फीमेल नहीं। तुम आत्मा में ही सारा पार्ट भरा हुआ है। अब यही मेहनत वा अभ्यास करो कि हम कैसे देही-अभिमानी रहें। यही ऊंची मंजिल है।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) ज्ञान को अच्छी रीति धारण कर देही-अभिमानी बनना है। यही मेहनत है। यही ऊंची मंजिल है। इस मेहनत से आत्मा को सतोप्रधान बनाना है।

2) जिन्न बनकर याद की यात्रा करनी है। माया कितने भी विघ्न डाले लेकिन मुख में मुलहरा डाल देना है। माया से तंग नहीं होना है। एक की याद में रहकर तूफान हटा देने हैं।

वरदानः- साधनों को यूज़ करते हुए साधना को अपना आधार बनाने वाले सिद्धि स्वरूप भव

कोई भी पुरानी दुनिया के आकर्षणमय दृश्य, अल्पकाल के सुख के साधन यूज़ करते वा देखते हो तो उन साधनों के वशीभूत हो जाते हो। साधनों के आधार पर साधना ऐसे है जैसे रेत के फाउण्डेशन पर बिल्डिग इसलिए किसी भी विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना न हो। साधन निमित्तमात्र हैं और साधना निर्माण का आधार है इसलिए साधना को महत्व दो तो साधना सिद्धि को प्राप्त करायेगी।

स्लोगनः- किसी भी कमजोरी का अंश है तो वंश पैदा हो जायेगा और परवश बना देगा।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

बुद्धि को एक ठिकाने पर टिकाने की जो युक्ति मिली है, वह स्मृति में रखो। हिलने न दो। देह और देह की दुनिया से न्यारे बन, मन-बुद्धि के विमान से सेकण्ड में आकारी और निराकारी स्थितियों को अनुभव करो। बुद्धि को हिलने न दो, नहीं तो युद्ध में समय बहुत व्यर्थ जाता है। जैसे तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं वैसे अपनी एकरस स्थिति के आसन पर विराजमान रहो तब भविष्य सिंहासन मिलेगा।

''मीठे बच्चे – श्रीमत पर चलकर सबको सुख दो, आसुरी मत पर दु:ख देते आये, अब सुख दो, सुख लो''

प्रश्नः- बुद्धिवान बच्चे किस राज़ को समझने के कारण ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करते हैं?

उत्तरः- वे समझते हैं कि यह दु:ख और सुख, हार और जीत का खेल है। अभी आधाकल्प सुख का खेल चलने वाला है। वहाँ किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं होगा। अब नई राजधानी आने वाली है, उसके लिए बाप अपना परमधाम छोड़कर हम बच्चों को पढ़ाने आये हैं, अब पुरूषार्थ कर ऊंच पद लेना ही है।

गीतः- बदल जाये दुनिया न बदलेंगे हम...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) शिवबाबा को विकारों का दान देकर फिर कभी वापस नहीं लेना है। देह-अभिमान के भूत से बचना है। इस भूत से सब भूत आ जाते हैं इसलिए आत्म-अभिमानी बनने का अभ्यास करना है।

2) ध्यान दीदार की आश नहीं रखनी है। एम-ऑब्जेक्ट को सामने रख पुरुषार्थ करना है। श्रीमत पर सबको सुख देना है।

वरदानः- करावनहार की स्मृति से सेवा में सदा निर्माण का कार्य करने वाले कर्मयोगी भव

कोई भी कर्म, कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो, सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हैं। कर्म अर्थात् व्यवहार और योग अर्थात् परमार्थ दोनों का बैलेन्स हो। शरीर निर्वाह के पीछे आत्मा का निर्वाह भूल न जाए। जो भी कर्म करो वह ईश्वरीय सेवा अर्थ हो। इसके लिए सेवाओं में निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करावनहार भूले नहीं तो सेवा में निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे।

स्लोगनः- सेवा व सम्बन्ध-सम्पर्क में विघ्न पड़ने का कारण है पुराने संस्कार, उन संस्कारों से वैराग्य हो।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

सभी से श्रेष्ठ तख्त बापदादा के दिल तख्तनशीन बनना है। लेकिन इस तख्त पर बैठने के लिए पहले अचल, अड़ोल, एकरस स्थिति का तख्त चाहिए। एकरस स्थिति के तख्त पर तब स्थित रह सकेंगे जब अकाल तख्तनशीन बनने का अभ्यास होगा। जैसे वह तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो तब सिंहासन मिलेगा।

''मीठे बच्चे – चैरिटी बिगेन्स एट होम अर्थात् जो देवी-देवता धर्म के हैं, शिव के वा देवताओं के पुजारी हैं, उन्हें पहले-पहले ज्ञान दो''

प्रश्नः- बाप का कौन-सा कर्तव्य कोई भी मनुष्य नहीं कर सकते हैं और क्यों?

उत्तरः- सारे विश्व में शान्ति स्थापन करने का कर्तव्य एक बाप का है। मनुष्य, विश्व में शान्ति स्थापन नहीं कर सकते क्योंकि सब विकारी हैं। शान्ति की स्थापना तब हो जब बाप को जानें और पवित्र बनें। बाप को न जानने के कारण निधनके बन गये हैं।

गीतः- मरना तेरी गली में...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) एक बाप से सच्ची प्रीत रख सच्चा-सच्चा पाण्डव बनना है। मौत सामने खड़ा है इसलिए पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है।
2) काम महाशत्रु जो आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है, उस पर जीत प्राप्त कर पावन बनना है, याद से विकारों की खाद निकाल आत्मा को गोल्डन एजड बनाना है।

वरदानः- मरजीवे जन्म की स्मृति द्वारा कर्मबन्धन को सम्बन्ध में परिवर्तन करने वाले परोपकारी भव

लौकिक कर्मबन्धन का सम्बन्ध अब मरजीवे जन्म के कारण श्रीमत के आधार पर सेवा के सम्बन्ध का आधार है। कर्मबन्धन नहीं सेवा का सम्बन्ध है। सेवा के सम्बन्ध में वैराइटी प्रकार की आत्माओं का ज्ञान धारण कर चलेंगे तो बंधन में तंग नहीं होंगे। लेकिन अति पाप आत्मा, अपकारी आत्मा से भी नफरत वा घृणा के बजाए, रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए, सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करेंगे तो नामीग्रामी विश्व कल्याणी वा परोपकारी गाये जायेंगे।

स्लोगनः- समय वा परिस्थिति प्रमाण वैराग्य आया तो यह भी अल्पकाल का वैराग्य है, सदाकाल के वैरागी बनो।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अथवा माया का वार, वार नहीं है लेकिन खेल के समान अनुभव हो तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और अवस्था एकरस रहेगी। लेकिन अगर इसे वार समझेंगे तो घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे। माया का काम है आना और आपका काम है विजयी बनना।

''मीठे बच्चे – रावण ने तुम्हें बहुत पीड़ित किया है, अभी तुम भक्तों का रक्षक भगवान आया है तुम्हारी पीड़ा को दूर करने''

प्रश्नः- सपूत बच्चों की मुख्य दो निशानियाँ सुनाओ?

उत्तरः- सपूत बच्चे सदा मात-पिता को फॉलो कर तख्तनशीन बनेंगे। खूब पुरुषार्थ में लगे रहेंगे। 2- उनकी बाप से दिल बहुत सच्ची होगी। सच्ची दिल वाले सदा श्रीमत पर चलेंगे। अगर अन्दर में सच्चाई नहीं तो याद में रह नहीं सकते।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) आत्मा में जो तमोप्रधानता के संस्कार हैं, उन्हें याद के बल से चेंज करना है। सतोप्रधान बनना है।

2) बाप से राजाई का वर्सा लेने के लिए सदा सपूत बच्चा बन श्रीमत पर चलना है। सच्चे बाप से सच्चा रहना है। मात-पिता को पूरा फॉलो करना है। ज्ञान रत्नों का दान करते रहना है।

वरदानः- अपने परिवर्तन द्वारा निरन्तर विजय की अनुभूति करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

जैसे निरन्तर योगी बने हो ऐसे निरन्तर विजयी बनो तो सच्चे सेवाधारी बन जायेंगे क्योंकि विजयी आत्मा, जब हर संकल्प, हर कदम में विजय का अनुभव करती है तो उनका यह परिवर्तन देख अनेक आत्माओं की सेवा स्वत: होती है। उनके नैन रुहानियत का अनुभव कराते हैं, चलन बाप के चरित्रों का साक्षात्कार कराती है, मस्तक से मस्तकमणि का साक्षात्कार होता है। ऐसे अपनी अव्यक्त सूरत से सेवा करने वाली विशेष आत्मा को ही सच्चा सेवाधारी कहा जाता है।

स्लोगनः- विशेषतायें वा गुण दाता की देन हैं, दाता को देखो व्यक्ति को नहीं।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

आत्मिक स्थिति के अभ्यास से वायुमण्डल को रुहानी बनाओ तो और सब बातें स्वत: ठीक हो जायेंगी, सब एकमत और एकरस हो जायेंगे फिर माया भी नहीं आयेगी क्योंकि वायुमण्डल शक्तिशाली होगा। वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए याद के प्रोग्राम रखो और आपस में उन्नति के लिए रूह-रिहान की क्लासेज़ करो, स्नेह मिलन करो। धारणा की क्लासेज़ रखो तो सफलता मिल जायेगी।

''देहभान के 'मैं-मैं' की होली जलाकर परमात्म संग के रंग की होली मनाओ''

- आज होलीएस्ट बाप अपने होली बच्चों से होली मनाने आये हैं।
- होली में पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। आप भी संगम पर अभी अपने पुराने संस्कार स्वभाव को योग अग्नि में जलाते हो। आप होली बनते हो वह होली मनाते हैं। होली अर्थात् जो बात हो चुकी वह होली। बीती सो बीती।
- बापदादा अभी से, अभी से हर एक बच्चे को सदा खिला हुआ गुलाब का पुष्प देखने चाहते हैं। खुशनसीब, खुशनुमा। बातें आयेंगी लेकिन अपना लक्ष्य लक्षण में लाना है। घबराना नहीं।
- बापदादा ने देखा कि तनाव में आने का कारण देह अभिमान का 'मैं' शब्द है। देहभान का मैं शब्द अभिमान का भी होता, अपमान का भी होता और दिलशिकस्त का भी मैं-मैं नीचे गिराता। तो आज क्रोध जीत में आगे बढ़ने के लिए बॉडी-कॉन्सेस का मैं इसको योग अग्नि में जलाओ। अनेक मैं-मैं को जलाओ और एक मैं आत्मा हूँ, इस 'मैं' शब्द को पक्का करो।

वरदान:- सदा फरमान के तिलक को धारण कर फर्स्ट प्राइज लेने वाले फरमानवरदार भव

जिन बच्चों के मस्तक पर फरमानबरदारी की स्मृति का तिलक लगा हुआ है, एक संकल्प भी फरमान के बिना नहीं करते उन्हें फर्स्ट प्राइज़ प्राप्त होती है। जैसे सीता को लकीर के अन्दर बैठने का फरमान था, ऐसे हर कदम उठाते हुए, हर संकल्प करते हुए बाप के फरमान की लकीर के अन्दर रहो तो सदा सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे और समय भी व्यर्थ नहीं जायेगा।

स्लोगन:- किसी से भी लगाव है तो वह लगाव पुरुषार्थ में अलबेला अवश्य बनायेगा।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

सदा एक की याद में रहकर एकरस अवस्था बनाओ तो वन-वन और वन में आ जायेंगे। बाहर रहते हुए भी यही पाठ पक्का करो – ''सी फादर, फॉलो फादर'', तो कभी किसी परिस्थिति में डगमग नहीं होंगे, ब्रह्मा बाप के सामने कितनी भी बातें आई लेकिन बातों को न देख एक बाप को ही देखा इसलिए नम्बरवन बना। तो फॉलो फादर।